हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

DTVF/17–HL-**HL7**

निर्धारित समय: तीन घंटे ***Time allowed: Three Hours***	*अधिकतम अंक: 250* ***Maximum Marks: 250***

नाम (Name): Chetan kumar meena

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? हाँ ✓ नहीं

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date):

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2017] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2017]:

0	2	5	4	8	0	8

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): Chetan

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instructions carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided into two **SECTIONS**.*

*Candidate has to attemp **FIVE** questions in all.*

*Questions Nos. **1** and **5** are compulsory and out of the remaining, **THREE** are to be attempted choosing at least ONE from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answers must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Word limit in questions, if specified, should be adhered to.

Any page or portion of the page left blank in the Question-cum- Answer book must be clearly struck off.

Attempts of questions shall be counted in chronological order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly.

अ-२६१

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): 139½

टिप्पणी (Remarks):

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

SECTION 'A'

1. निम्नलिखित काव्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके काव्य-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) यहु तन जालौं मसि करुं, ज्यूं धुंवां जाई सरग्गि।
मति वै राम दया करै, बरसि बुझावै अग्गि।

उपरोक्त काव्यांश प्रसिद्ध कवि कबीर की डॉ. श्यामसुंदरदास द्वारा संकलित 'कबीर ग्रंथावली' से उद्धृत है। ये कविता '~~ईश्व~~पिवको' अंग से उद्धृत है।

'विरह कौ अंग'

इन पंक्तियों में कवि कहते हैं कि उनका शरीर ईश्वर से दूर होने के कारण विरह-अग्नि में जल रहा है और यह धुँआ उठकर उस ईश्वर तक पहुँचे, ताकि उन्हें इस अपने प्रिय की दशा का बोध हो। वे ईश्वर इस स्थिति का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

जीव होते हो इस अग्नि से जल रहे
जीव पर अपने प्रेम की वर्षा करेंगे, तभी
जाकर यह आग शांत होगी।

<u>विशेष</u> → (1) यहाँ 'राम' सगुण नहीं, निर्गुण है।

(2) विरह की यह अग्नि भावनात्मक रहस्यवाद को व्यक्त करती है।

(3) भाषा के स्तर पर ~~[illegible]~~ कई भाषाओं का बोल मेल है। भाषा कविता में जानदार है जो कवि को <u>भाषा का डिक्टेटर</u> बनाने के लिए पर्याप्त है।

5½/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

(ख) उर में माखनचोर गड़े।
अब कैसेहू निकसत नहिं, ऊधो ! तिरछे ह्वै जो अड़े।।
जदपि अहीर जसोदानंदन तदपि न जात छँड़े।
वहाँ बने जदुबंस महाकुल हमहिं न लगत बड़े।।
को बसुदेव, देवकी है को, ना जानैं औ बूझैं।
सूर स्यामसुन्दर बिनु देखे और न कोऊ सूझैं।।

प्रसंग :- उपरोक्त काव्यांश वात्सल्य के सर्वश्रेष्ठ कवि सूरदास की आचार्य शुक्ल द्वारा संकलित 'भ्रमरगीतसार' से उद्धृत है। कृष्ण के कहने पर उद्धव वृन्दावन गये हैं जहाँ वे गोपियों को कृष्ण को भूलने व निर्गुण निर्गुण भक्ति का उपदेश देते हैं तब गोपियाँ जवाब में उपरोक्त पंक्तियाँ कहती हैं।

व्याख्या :- गोपियाँ कहती हैं कि हे उद्धव हम स्वयं भी कृष्ण की यादों को हृदय से निकालना चाहती हैं, किन्तु कृष्ण के प्रेम रूप तीर हमारे हृदय में तिरछे फंसे हुए हैं जिन्हें निकालना असंभव है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जसोदा के पुत्र कृष्ण की याद हमसे नही छूटती वे कृष्ण यदुवंश के सिरताज बन गए हैं किन्तु हमारे लिए वे कृष्ण ही हैं वे कृष्ण अब न वासुदेव के हैं और न देवकी के हैं, हमें तो केवल हमारे प्रिय कृष्ण माखनचोर ही नजर आते हैं। सूर कहते हैं कि उन्हें कृष्ण का राजा वाला नही बल्कि रासलीला वाला रूप ही प्रिय है।

विशेष → (1) 'वाग्विदग्धता' की दृष्टि से ये पंक्तियाँ भ्रमरगीतसार की सर्वश्रेष्ठ उपालंभ काव्य के रूप में पुष्टि करती हैं।

(2) एक सामंतवादी समाज में खुलकर कृष्ण को प्रेमी के रूप में देखना, नारी स्वतंत्रता का द्योतक है।

(3) उपरोक्त पंक्तियाँ कृष्ण का महत्व राजा के रूप में नही बल्कि प्रेम पालक के रूप में दर्शाती हैं।

(4) ब्रजभाषा की परिपक्वता व श्रेष्ठता अद्भुत है।

Good

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) दादुर मोर कोकिला पीऊ। करहिं बेझ घट रहै न जोऊ।
पुख नछत्र सिर ऊपर आवा। हौं बिनु नाँह मंदिर को छावा।
जिन्ह घर कंता ते सुखी तिन्ह गारौ तिन्ह गर्व।
कंत पियारा बाहिरें हम सुख भूला सर्व।।

उपरोक्त व्याख्येय पंक्तियाँ अवधी के अरहान और प्रेम के पीर कवि जायसी की अद्भुत काव्य सिद्धि 'पद्मावत' से उद्धृत हैं। इन पंक्तियों में रानी नागमती पति रत्नसेन के सिंहलद्वीप चले जाने पर अपनी विरहदग्ध अवस्था का मौसमी प्रतीकों के जरिये वर्णन करती है।

नागमती अपनी विरहदग्ध अवस्था व पति के अन्य पत्नी के खोज में उसे छोड़कर चले जाने पर क्षुब्धता प्रकट करती हुई कहती है, कि पक्षी बोल रहे हैं और बरसात के दिन आ गये हैं, पुण्य नक्षत्र के आ जाने से

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

लोग अपनी छतों की मरम्मत करेंगे, परंतु मेरे पति नहीं है अब मेरे घर की छत कौन ठीक करेगा। वे कहती हैं कि जिन स्त्रियों के पति घर में हैं, उनकी पत्नियाँ गर्व से रहती हैं, किन्तु मेरा पति घर से बाहर है, इसलिए मेरा सब सुख, मान, अहं सब खत्म हो गया है, सब विस्मृत हो गया। प्रेम की यह पीर नागमती की नियति है।

विशेष - (1) अवधी के 'बेलोस मिठास' अद्भुत है, रूढ़िगत उपमान के प्रयोग में मौसम के अनुसार पीड़ा का वर्णन अद्भुत है।

(2) नागमती का यह विरह 'आशिक माशूकों की निर्लज्ज प्रलाप नहीं हिंदू गृहिणी की सात्विक मर्यादापूर्ण पुकार है।" इन पंक्तियों में नागमती का नारीपन सामने आता है, रानीपन नहीं। साधारणीकरण की सरलता अद्भुत है।

(3) नागमती का विरह एकनिष्ठ व जाहिलिय है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) नैंक हँसो ही बानि तजि, लख्यौ मुहुँ नीठि।
चौका-चमकनि-चौंध मैं परति चौधि सी डीठि।।

निर्दिष्ट व्याख्यांश रीतिकाल के मूर्धन्य कवि बिहारीलाल जी 'बिहारी सतसई' से उद्धृत है। बिहारी शृंगार के सर्वश्रेष्ठ कवि हैं। शृंगार का यही वर्णन यहाँ अभिव्यक्त होता है।

उपरोक्त कविता में में नायक और नायिका की एक जगह उपस्थिति है। नायिका बानी को त्यागकर हँसने का प्रयास कर नायक को रिझाने का प्रयास करती है, नायक को उसका हँसता हुआ मुख नजर आता है। उसे देखकर नायक को चेहरे की चमकता और चाँदनी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उसको चौंकिया देती है। और वह उसके प्रति अलौकिक मोहासक्त हो जाता है।

विशेष →
① भाषा अत्यंत बिम्बात्मक है। पूरी कविता चलचित्र देखने जैसा अहसास कराती है। ऐसी विशेषता निराला, सूर जैसे महाकवियों तक ही सीमित है।

② अलंकार की छटा दर्शनीय है - "चौका चमकत - चौंक।"

③ 48 मात्राओं का छाया का दोहा शैली अर्थवत्ता रखता है।

④ ब्रज भाषा का प्रयोग, यहाँ भाषागत निखार व पुनता में है।

6/10

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) अरे भगाओ इस बालक को
होगा यह भारी उत्पाती
जुलुम मिटाएंगे धरती से
इसके साथी और संघाती
'यह उन सबका लीडर होगा
नाम छपेगा अख़बारों में
बड़े-बड़े मिलने आएंगे
लद-लदकर मोटर-कारों में

प्रस्तुत काव्यांश जनकवि 'नागार्जुन' की बेलछी कांड से व्यथित होकर उठी वेदना से लिखी कहानी 'हरिजन गाथा' से उद्धृत है। दलित संवेदना का यह जीवंत दस्तावेज नागार्जुन की संवेदनशीलता का प्रमाण है। ऊँची जात वाले मनुपुत्रों द्वारा हरिजनों को जिंदा आग की लपटों में झलझलवित कर दिये जाने पर हरिजन घर में बालक का जन्म होता है।

नागार्जुन ने इस बालक को कृष्ण का मिथकीय रूप देकर मार्क्सवादी क्रांति का वाहक बताया है और अपने ऊपर हुए हर अत्याचार का बदला लेने वाला बताया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

है। ज्योतिषी बाबा बालक का वर्णन करते हुए कहते है कि यह बालक व्यवस्था को बदलाव लाने वाला है, यह और इसके साथी मिलकर सभी अत्याचारों व उत्पीड़नो से छुटकारा दिलाएंगे। यह बालक हरिजन समाज का नेतृत्व करेगा और पूरी राजनीतिक धुरी इसके चारो ओर घूमेगी सभी जगह मीडिया में इसी की चर्चा होगी।

विशेष → ① उपरोक्त पंक्तियों में यह बालक एक अर्थ में महाराज की "क्रान्तिकारी अभिलीक" है। मार्क्सवादी ढाँचे में दलित उत्पीड़न का निवारण नागार्जुन की अपनी दृष्टि है, जो उच्च वर्गों को ऐसे अत्याचार रोकने को चेताती है।

② ये पंक्तियाँ तब जीवंत हो उठती है जब ऊना, सहारनपुर के दलित अत्याचारों के विरुद्ध भीम सेना जैसे संगठन हिंसक हो उठते हैं।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

2. (क) 'अपनी मूल प्रकृति में पद्मावत एक त्रासदी है।' आप इस मत से कहाँ तक सहमत हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 20

पद्मावत की सर्जनात्मक व्यंजना हिन्दी समीक्षा के सामने विवाद और नये अर्थों की व्यंजना खोजती नजर आती है। शुरुआती समीक्षकों ने इसकी व्याख्या तसव्वुफ़ के आधार पर की। किन्तु बाद के समीक्षकों ने इसे लौकिक कथा के रूप में देखा तो स्वाभाविक रूप से त्रासदी का प्रश्न उठ खड़ा हुआ।

प्रसिद्ध समीक्षक साही ने अपनी पुस्तक 'जायसी' में पद्मावत को एशिया की धरती की पहली रचना बताया जो ट्रेजिडी के ढाँचे में रची गई।

वस्तुतः इस रचना में रत्नसेन के पद्मावती को प्राप्त करने तक के प्रसंग में तो कथा सुखात्मक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

सुखान्त परंपरा में चलती है।
किन्तु आगे चलकर यह रचना त्रासद प्रभाव की ओर बढ़ती है। पश्चिम में त्रासदी का उद्देश्य विरेचन माना गया है जिसके लिए भद्र नायक प्रतिनायक से संघर्ष करता है और नैतिक भूल (हैमर्तिया) के कारण पतन की ओर बढ़ता है और शेक्सपीरियन ढाँचे में मृत्यु को प्राप्त करता है। यदि इसी ढाँचे पर करें, तो रत्नसेन भद्र उस अर्थ में नहीं रहता जहाँ उससे नैतिक, साहसी, औदात्य होने की अपेक्षा हो। किंतु प्रेम की प्रतिबद्धता के आधार पर वह भद्रता को धारण करता है।
रचना के अंत के प्रसंगों में जहाँ राजा रत्नसेन अपनी पत्नी के

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

अपमान का बदला लेने के प्रयास में वीरगति को प्राप्त करता है और नागमती व पद्मावती जौहर करती हैं। यह स्थल किसी भी पाठक को विरेचन की अवस्था में पहुँचा सकता है। यद्यपि इस त्रासदी में खलनायक भी दुखी प्रतीत होता है, उसे भी अपना उद्देश्य प्राप्त नहीं होता।

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहा जा सकता है कि त्रासद प्रभाव की उत्पत्ति के कारण त्रासदी की अनुगूँज तो दिखाई देती है, किन्तु भद्र नायक, नायक-प्रतिनायक संघर्ष, नायक की गंभीर भूल, खलनायक द्वारा तड़पा-तड़पा कर नायक की त्रासद

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मृत्यु उसे जैसा पश्चमी त्रासदी का ढाँचा यांत्रिक रूप से प्रयुक्त नहीं हुआ है। ध्यान यह भी रखना चाहिए कि न तो जायसी की इच्छा त्रासदी रचने की थी और न ही वे इस परंपरा से परिचित थे।

एक गंभीर सर्जक होने के नाते जायसी के काव्य में त्रासद तत्व नजर आना स्वाभाविक है, यद्यपि यांत्रिक रूप से त्रासदी के ढाँचे को तलाश रचना के साथ अन्याय होगा।

11½/20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) बिहारी की बिंब-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बिम्ब योजना पश्चिम में फ्लिंट जैसे विचारकों द्वारा प्रयुक्त तरीका का मुहावरा है। आचार्य शुक्ल ने भी भी बिम्ब को काव्य की महानता की कसौटी माना है, वे कहते हैं - "कविता में अर्थग्रहण मात्र से काम नहीं चलता बिम्ब ग्रहण भी अपेक्षित है।"

यदि बिहारी के काव्य को बिम्बयोजना पर कसें, तो बिहारी बाकी कवियों से कोसों आगे खड़े नजर आते हैं।

बिहारी ने अनुभाव केन्द्रित योजना काव्य शिल्प की युक्ति बनाती है, जिसका सीधा फायदा हुआ कि उनकी कविताएँ चलचित्र का रूप धारण करती हैं। उनकी एक कविता में सात अनुभावों

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की चेष्टा यह अहसास कराने को पर्याप्त है -

" कहत नटत रीझत खिजत मिलत खिलत लजियात
भरे भौन में करत हैं नैनन ही सों बात।"

बिहारी की बिम्बात्मकता की सघन उपस्थिति का एक कारण यह था कि दरबारी माहौल में हल्के रसिकों से गूढ़ चिंतन की अपेक्षा नहीं की जा सकती, वे हर चीज में चित्रात्मक अनुभूति चाहते, इसलिए भक्ति जैसी धारणा को भी बिहारी बिम्बों से जोड़ते हैं -

"बतरस लालच लाल की मुरली धरी लुकाय
सौंह करे भौंहनु हँसे दैन कहे नट जाय।"

बिहारी की बिम्बात्मकता का सर्वोत्कृष्ट नजारा वहाँ भी दिखता है जहाँ वे अमूर्त भावों को बिम्बात्मक

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रदान करते हैं। राजनीतिक संदेश भी वे चित्रभाषा में ही देते हैं -

"नहीं पराग नहिं मधुर मधु नहिं विकास इहिं काल
अलि कलि ही सों बंध्यो आगे कौन हवाल।"

बिहारी की बिम्बभाषा वहाँ भी अद्भुत रूप ग्रहण करती है जहाँ वे प्रत्येक कला के उद्देश्य तक को चित्रभाषा में व्यक्त करते हैं -

"तंत्रीनाद कवित्त रस सरस राग रति रंग
अनबूड़े बूड़े तिरे जे बूड़े सब अंग।"

स्पष्ट है कि बिहारी सतसई अपनी चमत्कारधर्मिता के जिन तत्वों के लिए विख्यात है उनमें बिम्बात्मकता सर्वश्रेष्ठ गुण है, निराला, सूर जैसे महाकवि ही उनकी बराबरी कर पाते हैं तभी तो ग्रियर्सन को यूरोप में उनके समकक्ष कवि नजर नहीं आते।

अच्छा
8½/15

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ग) पद्मावत में नागमती के विरह-वर्णन की विशिष्टताओं पर प्रकाश डालिये। 15

हिन्दी साहित्य परंपरा में विरहवर्णन का विशेष महत्व रहा है। आचार्य शुक्ल ने अनेकों विरहों का अध्ययन कर जायसी ग्रंथावली में घोषणा की कि 'नागमति का विरह वर्णन हिंदी साहित्य की अद्वितीय वस्तु है।"

अनेक (बहुवचन है)

नागमती के विरह वर्णन की अद्वितीयता का मूल कारण विरह में नागमती का नारीकरण है, न कि रानीकरण। जिस प्रकार से जायसी ने नागमती का साधारणीकरण किया है, वह अद्भुत है।

नागमती के विरह की दूसरी सबसे बड़ी विशेषता विरह के जरिये प्रेम की प्रतिबद्धता व गार्हस्थिकता का निदर्शन है। जिसकी प्रशंसा करते हुए शुक्ल

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

भी कहते हैं कि "यह आशिक मारुओं का निर्लज्ज प्रलाप नहीं, किन्तु नारियों की सात्विक मर्यादापूर्ण विरह वाणी है।" प्रेम की प्रतिबद्धता व उसमें त्याग की भावना व प्रिय के सम्मान का जिक्र नागमती के इस विरह पंक्तियों में दिखता है, जहाँ वह कहती है "मकु तेहि मारग उड़ि परे कंत धरे जहँ पाँव।"

नागमती के विरह की गंभीरता का वर्णन करते ही हैं, किन्तु साथ ही मसनवी शैली के अनुरूप जायसी ऊहात्मकता को धारण करते हैं और नागमती को "जरि कोयला भई" कहकर ऊहात्मकता प्रदर्शित करते हैं किन्तु रोचक बात है कि ऊहात्मकता होने के बावजूद नागमति को 'तोला माँसु न रहा देहा' के बावजूद मज़ाक नहीं

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

बना दिया है।

उसके विरह की एक महत्वपूर्ण बात है - आत्मविस्तार। ~~कबीर~~ सूर की गोपियाँ प्रकृति को "तुम हो निलज, लाज नहीं तुमको" कहकर उलाहना देती हैं, किन्तु नागमती के साथ प्रकृति दुख बाँटती नजर आती है और पक्षी नागमती से प्रश्न करते नजर आते हैं कि "फिर फिर रोव, कोऊ नहीं डोला। आधी रात विहंगम बोला।" वे यहाँ तक कहते हैं कि तुम "फिर फिर के हमें अपनी विरहाग्नि से जला रही हो।

स्पष्ट है कि नागमती के विरहवर्णन पर कुछ समीक्षकों ने मध्यकालीन दासता की अभिव्यक्ति के आरोप भी लगाए हैं। यह बात सत्य है, किन्तु इसकी प्रेम की प्रतिबद्धता, गार्हस्थिकता अद्भुत व कौशिशाल है।

अच्छा
8½/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

SECTION 'B'

5. निम्नलिखित गद्यांशों की संदर्भ-सहित व्याख्या (लगभग 150 शब्दों में) प्रस्तुत करते हुए उनके रचनात्मक-सौंदर्य का परिचय दीजिये: 10 × 5 = 50

(क) मैं प्रेम को संदेह से ऊपर समझती हूँ। वह देह की वस्तु नहीं, आत्मा की वस्तु है। संदेह का वहाँ जरा भी स्थान नहीं और हिंसा तो संदेह का ही परिणाम है। वह संपूर्ण आत्मसमर्पण है। उसके मंदिर में तुम परीक्षक बनकर नहीं, उपासक बनकर ही वरदान पा सकते हो।

निर्दिष्ट पंक्तियाँ शिखर उपन्यासकार प्रेमचंद के महाकाव्यात्मक उपन्यास 'गोदान' से उद्धृत हैं। इन पंक्तियों में प्रेमचंद मेहता-मालती के जरिये अपनी प्रेम दृष्टि प्रक्षेपित कर रहे हैं। गाँव में बजरा बनाकर नदी के तीर पर मेहता मालती में प्रेम को लेकर संवाद होता है। जहाँ मेहता प्रेम को 'खूँखार शेर' की तरह बताते हैं जिस पर किसी का अधिकार अस्वीकार्य बताते हैं। तब मालती प्रत्युत्तर में कहती है-

मालती छायावादी अलौकिकता में प्रेम के देह से ऊपर आत्मीयता, साहचर्य की वस्तु बताती है। मेहता द्वारा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेम को 'सीधी सादी गऊ' नहीं बल्कि 'खूंखार शेर' बताये जाने के विरुद्ध प्रेम को गांधीवादी भाषा में अहिंसक बताती है और 'प्रेम के बीच सवाल जवाब नहीं बल्कि परस्पर उपासना भाव को जरूरी बताती है। वह मेहता को संदेश देती है कि उनका प्रेम निष्काम व दैहिक आकर्षण से परे है।

विशेष → (1) प्रेम का यह वर्णन गांधीवादी आदर्श के धनी प्रेमचंद का स्वयं का है। यहाँ छायावादी आदर्शात्मकता की झलक है जो इसी समय प्रसाद 'श्रद्धा' के जरिये प्रदर्शित कर रहे थे।

(2) प्रसाद कहते थे कि 'दया ममता लो आज अगाध, हमारा खुला है हृदय रत्न निधि पास'
यह वही दृष्टिकोण है जो यहाँ मालती का है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) संभवतः पहचानती नहीं हो और न पहचानना ही स्वाभाविक है क्योंकि मैं वह व्यक्ति नहीं हूँ जिसे तुम पहचानती रही हो। दूसरा व्यक्ति हूँ, और सच कहूँ तो वह व्यक्ति हूँ जिसे मैं स्वयं नहीं पहचानता हूँ।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपरोक्त पंक्तियाँ प्रसिद्ध नाटककार मोहन राकेश की प्रौढ़ रचना 'आषाढ़ का एक दिन' के अंतिम अंक से उद्धृत हैं। उपरोक्त पंक्तियों में कालिदास मल्लिका से मिलने आया है और राज पाट सब कुछ छोड़कर पुरानी दुनिया में लौटने का प्रयास करता है। वह अपनी स्थिति का वर्णन इस संलाप के जरिये करता है -

कालिदास का कहना है कि वह मूल रूप से कवि था जो अत्यधिक भावुक प्रकृति प्रेमी था, किन्तु अभावों का प्रतिकार उसे उस जगह ले गया जहाँ वास्तुतः उसे नहीं जाना चाहिए था। वह राज पाट के मोह में पड़कर कवि

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

अस्तित्व से दूर हो गया है, जिसे न तो मल्लिका पहचानती है और न ही यह वर्तमान कालिदास जो अपने मूल से तुलना करके देख रहा है।

विशेष :- ① कालिदास का यह 'व्यक्तित्व का विखंडन' तथा 'अधूरापन' अस्तित्ववादी निरर्थकता बोध का परिणाम है।

② कालिदास ने वस्तुतः इतिहास की चादर ओढ़ रखी है, यह कालिदास 'आज का' व इसका अधूरापन आधुनिक शहरी जीवन का है।

③ भाषा की सांकेतिकता व प्रवाह अद्भुत व विस्मित कर देने वाला है। पूरी पंक्तियाँ प्रतीक रूप में चल रही हैं।

6/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) पर मुझसे कुछ नहीं बोला जाता। बस मेरी बाँहों की जकड़ कसती जाती है, कसती जाती है। रजनीगन्धा की महक धीरे-धीरे तन-मन पर छा जाती है। तभी मैं अपने भाल पर संजय के अधरों का स्पर्श महसूस करती हूँ, और मुझे लगता है, यह स्पर्श, यह सुख, यह क्षण ही सत्य है, वह सब झूठ था, मिथ्या था, भ्रम था।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

उपरोक्त पंक्तियाँ 'नई कहानी' आंदोलन की ~~प्रस्तावक मोहन~~ प्रतिनिधि रचनाकार मन्नू भंडारी की 'यही सच है' कहानी से उद्धृत हैं। इन पंक्तियों में दीपा संजय और निशीथ के प्रेम की तुलना कर संजय का सुरक्षा देने वाला प्रेम श्रेष्ठ नजर आता है, जिसकी अभिव्यक्ति वह डायरी शैली में करती है - दीपा कहती है कि संजय के साथ मेरा प्रेम आलिंगन अद्भुत अनुभव देता है, और संजय का साहचर्य होते ही प्रतीत होता है कि निशीथ

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का रोमानी प्रेम सच नहीं था वह तो छल था, वह मिथ्या था और संजय का प्रेम ही वास्तविक है।

विशेष →

① उपरोक्त पंक्तियाँ दर्शाती है कि नारी के लिए रोमानी व आदर्श प्रेम के बजाय सुरक्षा प्रदान करने वाला प्रेम महत्वपूर्ण है। यद्यपि आगे चलकर कोलकाता में दीपा रोमानी प्रेम के आगे कमजोर पड़ने लगती है।

② रिश्तों की यह उधेड़बुन व निर्मम वास्तविकता 'भोगा हुआ यथार्थ' है।

5 1/2 / 10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) जब आप याद करेंगे कि मुगल बादशाहों के ज़माने में इन कोल किरातों का आखेट होता था और जो पकड़े जाते थे, वे काबुल में बेच दिए जाते थे और ब्रिटिश साम्राज्यवाद के शासन में लाखों की तादाद में उन्हें जरायम पेशा करार दिया गया, तब तुलसीदास की प्रगतिशीलता समझ में आएगी।

उपरोक्त पंक्तियाँ डॉ. ~~रामविलास चतुर्वेदी~~ राम विलास शर्मा के प्रसिद्ध निबंध 'तुलसी के ~~काव्य~~ साहित्य में सामंतवाद विरोधी मूल्य' से उद्धृत हैं। इन पंक्तियों के जरिये रामविलास शर्मा प्रदर्शित करते हैं कि तुलसी पर लगे आक्षेप उचित नहीं हैं, वे मूलतः सामंतवाद के हर लक्षण का प्रतिकार करते हैं।

डॉ. शर्मा अभिव्यक्त करते हैं कि कि तुलसी के समय मुगलकाल में स्थितियाँ अत्यंत भयावह थी। लोगों का व्यापार, शिकार होता था और यह स्थितियाँ ब्रिटिश काल में बनी रही जहाँ जनजातियों के ऊपर अपराधिक जनजाति

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

का विरोध लगाकर जाति पेशा और अन्यायपूर्ण कानूनों को थोप दिया जाता। ऐसे व्यवस्था के बीच तुलसी ऐसे कवि हैं जो समाज में प्रत्येक व्यक्ति को दैहिक दैविक भौतिक ताप से उपलब्ध कराते हैं। इसी तुलना से सहज ही तुलसी की सामंतविरोधी धारणा का पता चलता है।

विशेष → ① तुलसीदास की वर्णव्यवस्था व नारी संबंधी दृष्टिकोण के आधार पर कुछ समीक्षकों ने उन्हें सामंती मानसिकता से युक्त बताया है। तब रामविलास शर्मा उनकी सही समीक्षा करते हैं और उनके सामंतविरोधी वैचारिकता को अभिव्यक्त करते हैं।

② भाषा सरल व सहज है, जो उनके काव्य धारणा के अनुकूल है।

5½/10

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) जब समस्त हिन्दू जाति की एक वैदिक सम्प्रदाय न रही, तो वही मसल चरितार्थ हुई कि "एक नारि जब दो से फँसी जैसे सत्तर वैसे अस्सी"। हमारी एक हिन्दू जाति के असंख्य टुकड़े होते-होते यहाँ तक खण्ड हुए कि अब तक नये-नये धर्म और मत-प्रवर्तक होते ही जाते हैं।

प्रसंग → उपरोक्त पंक्तियाँ 'निबंध निलय' नामक निबंध संग्रह से अभिव्यक्त है। यहाँ लेखक भारतीय इतिहास में हिन्दू धर्म से अन्य धर्मों की व्युत्पत्ति प्रक्रिया को वर्णित कर रहे हैं।

व्याख्या: लेखक का मत है कि हिन्दू केवल एक जाति मात्र नहीं है, न ही एक एक वैदिक सम्प्रदाय मात्र है। बल्कि यह एक वृहद् अवधारणा है जिससे नये नये धर्मों, संप्रदायों की

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कोंपलें फूटती रहती हैं। धर्मों के बनने की यह प्रक्रिया अभी भी जारी है।

विशेष - ① लेखक का इशारा है कि बौद्ध, जैन, सिख आदि धर्म एक ही हिन्दू संस्कृति से निकले हुए हैं।

② लेखक यहाँ हिन्दू धर्म को धर्म नहीं मानता बल्कि जीवन संहिता के वृहद परिप्रेक्ष्य में देखता है। यह वही दृष्टिकोण है जो उच्चतम कोर्ट ने हाल में व्यक्त किया कि हिन्दू धर्म धर्म नहीं, जीवन प्रक्रिया है।

③ लेखक की ऐतिहासिक चिंतनशीलता व सामाजिक विश्लेषण गजब का है।

2½/10

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

6. (क) 'गोदान' नामकरण की सार्थकता पर विचार कीजिये। 20

'गोदान' हिन्दी साहित्य का प्रथम महाकाव्यात्मक उपन्यास है, जिसके नामकरण पर भी काफी समीक्षकों ने बौद्धिक पसीना बहाया है। सामान्यतः किसी नामकरण की सर्वश्रेष्ठता की कसौटी यह है कि वह रचना की पूर्व झलक देता हो, उसकी रचना के दौरान सर्वत्र अभिव्यक्ति होती हो तथा रचना की संवेदनशीलता को पूर्णता में व्याप्त करता हो।

हिन्दी उपन्यास धारा में 'मैला आँचल' भूगोल प्रधान, 'दिव्या' व्यक्ति आधारित व 'महाभोज' स्थिति प्रधान नामकरण हैं। इसी प्रकार 'गोदान' भी एक विशेष स्थिति को अभिव्यक्त करता है जिसका तात्पर्य है - गाय का दान करना। वस्तुतः यह

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गाय इस रचना की केन्द्रीय धुरी है जिसके चारों ओर विभिन्न पात्र, घटना, वर्णन घूमते रहते हैं। रचना में शुरुआत में ही स्पष्ट है कि होरी को चिरकाल से संचित लालसा गाय की है। गाय प्राप्ति के क्रम में ही झुनिया, गोबर मिलन होता है, गाय के कारण ही हीरा-होरी विवाद होता है। गाय की इच्छापूर्ति में होरी जिंदगीभर संघर्ष करता है और मृत्युशय्या पर लेटे अंतिम समय में भी "गाय की लालसा अधूरी रह गयी"- उसे जीवन की सबसे अधूरी इच्छा नजर आती है।

यह गाय सामाजिक मर्यादा, जातीय बंधनों का भी प्रतीक है। समाज की तत्कालीन परिस्थितियाँ ऐसी हैं कि धार्मिक लोग

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मरते हुए व्यक्ति से भी गोदान की इच्छा रखते हैं।

'गोदान' नामकरण के कारण पाठक पढ़ने से पहले ही समझ जाता है कि गाय इस रचना में महत्वपूर्ण भूमिका निभायेगी। होरी के संघर्ष व सामाजिक कर्मकाण्डों व शोषक प्रथाओं की अभिव्यक्ति गोदान के जरिये बखूबी होती है।"

'गोदान' नामकरण की सबसे खास बात है कि इतना संक्षिप्त और सारगर्भित नाम ~~रखने~~ रखने हेतु प्रेमचंद ने लंबी मानसिक जद्दोजहद की होगी। यदि 'गोदान' से इतर नाम सोचे तो चरित्र मूलक रूप में

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'होरी', प्रतिमूलक रूप में 'होरी की बचुडी इच्छा' आदि नाम हो सकते हैं, किन्तु जो गहराई 'गोदान' नाम में मिलती है, वह नामकरण की सर्वश्रेष्ठता की द्योतक है।

कुल मिलाकर जिस प्रकार 'मैला आँचल' जैसा सटीक नाम दुर्लभ है वैसे ही 'गोदान' नाम भी इस रचना का अन्यतम है।

अच्छा प्रयास

10½/20

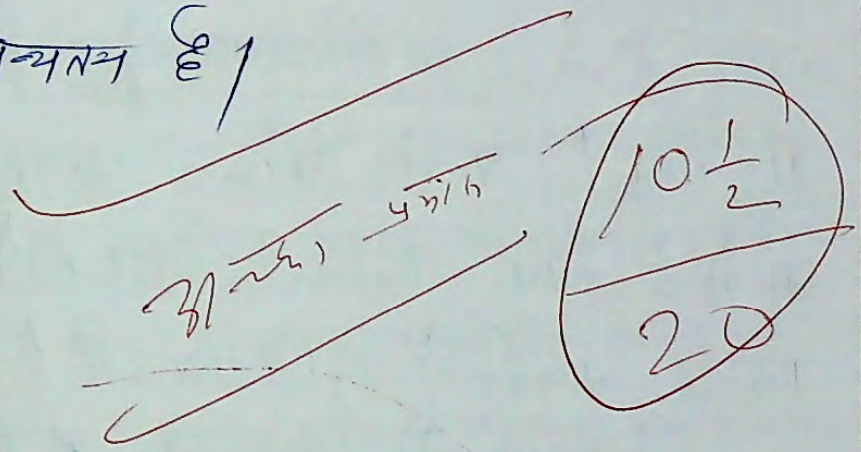

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) प्रेमचंद की कहानी 'ईदगाह' की श्रेष्ठता के कारणों पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

प्रेमचंद हिन्दी कहानी कला के सर्वश्रेष्ठ रचनाकार समझे जाते हैं। जितना महत्व उनका कफन, पूस की रात, सद्गति जैसी कहानियों के कारण है, उससे ज्यादा ख्याति उन्होंने ईदगाह से प्राप्त की।

'ईदगाह' की सर्वश्रेष्ठता का प्रमुख आधार है - बाल मनोविज्ञान की अद्भुत अभिव्यक्ति। बच्चे हामिद का अन्य बच्चों के साथ अदालती अंदाज में वाकयुद्ध वाकई में लाजवाब है। बाल मनोविज्ञान की खास बात है कि बच्चे बातों ही बातों में समाज, राजनीति, शासन की विद्रूपताओं पर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

चोट करते हैं, एक बच्चे पुलिसवालों की भूमिका पर कहता है " अजी हुजूर सभी तुम बहुत जानते हो। अजी यही चोरी करवाते हैं।"

ईदगाह की सर्वश्रेष्ठता का दूसरा कारण स्थिति की गंभीरता के विश्लेषण में है। जिस ईदगाह में भगवान के समक्ष सभी लोग बराबर हैं, समाज की वास्तविक स्थितियाँ एकदम विपरीत है। हामिद का चिमटा खरीदना बालकोचित व्यवहार नहीं बल्कि समाज की कठोर परिस्थितियों में उम्र से बढ़कर व्यवहार करने को मजबूर बालक की स्थिति का परिचायक है। यहाँ बालक हामिद बूढ़े हामिद का पाठ इसलिए खेलता है कि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

समाज का विकृत स्वरूप बालकों की बालकता को कुंठित करने में दोष बड़े कर चुका है, इसी सच्चाई पर प्रेमचंद चोट करते हैं।

हिन्दी साहित्य में ऐसे कम कवि हुए हैं जो लोकतांत्रिक मनोवृत्ति को अभिव्यक्त करते हैं। जिस प्रकार जायसी 'पद्मावत' में हिन्दू घर में प्रवेश करते हैं, वैसे ही प्रेमचंद 'ईदगाह' में। यह प्रेमचंद की सांप्रदायिकता विरोधी 'गंगा जमुनी तहजीबी' मानसिकता का परिचायक है। यह बात उनकी इस कहानी की हिन्दुस्तानी भाषा (कालीप्रधान) में भी दिखती है।

यह कहने में कोई हर्ज नहीं कि बाल मनोविज्ञान पर जैसी रचना 'ईदगाह' है, वैसी आज तक नहीं रची गई।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) 'यही सच है' कहानी की शिल्प-योजना पर प्रकाश डालिये। 15

'यही सच है' लेखिका मन्नू भंडारी की प्रतिनिधि कहानी है। यह रचना शिल्प की दृष्टि से '~~नई समीक्षा~~' ~~नई कविता~~ 'नई कहानी' आंदोलन की सभी विशेषताओं को धारण करती है।

'यही सच है' कहानी की शिल्पता का सर्वश्रेष्ठ पक्ष है इसकी - डायरी शैली में लेखन। डायरी शैली के कारण दीपा वह सब कुछ कह पाई है जो शायद किसी दूसरे चरित्र से संवाद करके नहीं कह पाती। यही कारण है कि दीपा के चरित्र का प्रत्येक पक्ष उभरकर सामने आया है, नैतिकता अथवा दुनियादारी का कोई पर्दा सामने नहीं रह गया

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

यह निशीथ व संजय के प्रति आकर्षण की तुलना सहज रूप में का पायी है।

'यही सच है' कि पूर्वदीप्ति शैली की अद्भुत है। पुराने अतीत के चित्रों की पूरी उद्घाटन रचना में हुई है। यद्यपि इन दोनों शैलियों के कारण अन्य पात्रों के बाहरी रूप ही उभर पाये है, आंतरिक व्यक्तित्व दबा रहगया।

चरित्रों की स्वाभाविकता, सहजता व स्वायत्तता के अतिरिक्त 'नई कहानी' की एक और प्रतिनिधि विशेषता प्राप्त हुई है- कथानक का टूटना। यहाँ कथानक पूरा बिखर गया है। घटनाओं, चरित्रों की कमी है किन्तु मनन विश्लेषण भरपूर है। ~~~~ भूत वर्तमान व भविष्य

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

आपस में घुल मिल गये हैं।

कहानी में भावनाओं की अभिव्यक्ति के कारण काव्यात्मकता, प्रतीकात्मकता भी आ गयी है, जिसका एक नमूना है -

" यह स्पर्श यह सुख ही सत्य है, वास्तविक है, वह प्यार भ्रम, मिथ्या, झूठा था।"

उपरोक्त विश्लेषण के आधार पर यह कहानी 'नई कहानी' के शिल्प को समझाने के लिए पर्याप्त है।

अच्छा

8½/15

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

7. (क) 'गोदान पर छायावादयुगीन नारीत्व परिकल्पना, प्रेमदर्शन एवं रोमांटिक दृष्टिकोण का स्पष्ट प्रभाव है।' इस कथन की समीक्षा कीजिये। 20

आचार्य शुक्ल ने कहा है कि साहित्य अपने समय की चित्तवृत्तियों से भी प्रभावित होता है। प्रेमचंद के समानांतर काव्य में छायावादी युग जोरों से संचालित था, जिसका स्वाभाविक परिणाम था कि गोदान जैसा महाकाव्य भी प्रभावित होता। जिस प्रकार छायावादी नारी चरित्र 'श्रद्धा' और स्कन्दगुप्त की 'देवसेना' है वैसे ही उच्च चरित्र यहाँ नजर आये हैं।

छायावाद में नारी को आदर्श अखिल प्रदान किया जाता। उसे त्याग की मूर्ति, प्रेम की अगाध माया समझा जाता, उससे केवल श्रद्धा होनी

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

की अपेक्षा की जाती। इसी प्लेटोनिक एवं वायवीयता के नारीत्व कल्पना को गोविन्दी के चरित्र में व्यक्त किया है। आगे चलकर मालती भी ऐसा ही व्यक्तित्व धारण करती है जो 'संसृति के कल्याण' हेतु अविवाहित रहने का निर्णय लेती है।

प्रेमचंद का छायावादी प्रेम दर्शन व रोमांटिक प्रेमदृष्टि मूलतः मेहता-मालती प्रसंगों में उभरता है। यह दर्शन दो जगह अभिव्यक्त होता है। पहली बार जब नदी के किनारे बजरा बनाकर प्रेम गोष्ठी करते हैं, तब यह दृष्टि उभरती है। मेहता का मानना था कि प्रेम 'जुआर शेर' की तरह है जो किसी की ~~आर~~ नजर उस पर नहीं पड़ने देता है वह प्रेम को ~~हर्गिज~~ हरगिज 'सीधी सादी

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गऊ नहीं मानता। इसके विपरीत व्यक्तित्वांतरण के पश्चात मालती का प्रेमपंथीय आदर्श रूप उसका सामने आता है जहाँ वह प्रेम को 'देह की नहीं आत्मा की वस्तु' कहती है।

प्रेम का यह छायावादी आदर्श तब नजर आता है जब 'देवसेना' और 'सोफिया' की तरह मालती भी विवाह को जीवन की दुरहता कहकर नकार देती है और अपने को आलक्षित करते हुए लोगों के कल्याण में लगाने का फैसला करती है। इस रूप के सामने मेहता नतमस्तक हो जाते हैं और मालती के महान व्यक्तित्व की जयकार करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

किन्तु ध्यान देने वाली बात है कि छायावादी प्रेमदृष्टि गोदान की एक अंश मात्र है। गाँव की परिस्थितियाँ ऐसी नहीं होती जहाँ आदर्श प्रेम जमा किया जा सके। इस बात का ध्यान रखते हुए प्रेमचंद ने छायावादी दृष्टि हेतु उन्हें चरित्रों का ही चयन किया है, जो भी शहरी वर्ग के।

अतः कहा जा सकता है कि प्रेमचंद छायावादी आदर्शवाद व प्लेटोनिक प्रेमदृष्टि से प्रभावित थे, जो सभी भावों को धारण करने वाले महाकाव्यात्मक उपन्यास की एक माँग भी थी।

11½ / 20

Copyright – Drishti The Vision Foundation

A3

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) 'वर्ग-मनोविज्ञान के अंकन में प्रेमचंद सिद्धहस्त है।' प्रेमचंद की कहानियों के आधार पर इस कथन पर विचार कीजिये। 15

कुछ समीक्षकों का मत है कि प्रेमचंद का सर्वश्रेष्ठ पक्ष मनोविज्ञान का निदर्शन है। कहानी कला में जैनेन्द्र, अज्ञेय व इलाचंद्र जोशी भी मनोवैज्ञानिक रचनाकार हुए हैं, किन्तु उनका मनोविज्ञान मनोविश्लेषणवादी दर्शन से प्रभावित है। किन्तु प्रेमचंद का मनोविज्ञान 'पढ़ा हुआ नहीं', जीवन में सहज दृष्टि से 'अवलोकित किया हुआ' मनोविज्ञान है। प्रेमचंद का समाज ऐसा था कि जहाँ समान लोगों का व्यवहार भी समान था, अतः सामाजिक मनोविज्ञान सहज रूप से उनका विषय बना।

वैसे तो प्रेमचंद ने सभी सामाजिक वर्गों के मनोविज्ञान का चित्रण किया है, किन्तु खिलाड़ी, बूढ़ों, किसानों,

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

दलितों में उनका मन ज्यादा रमा है।

प्रेमचंद नारी मनोविज्ञान के अद्भुत ज्ञाता थे। जिसका नमूना है - "पन्ना लापती स्त्री थी। और रूप और गर्व में चोली दामन का नाता है।" नारी मनोविज्ञान की सटीक पहचान वे 'नया विवाह' में करते हैं जहाँ आशा बेमेल पति के बजाय सहज ही ~~सब~~ हमउम्र नौकर के प्रति अनुरक्त होती है।

'दलित मनोविज्ञान' का वे सटीक वर्णन सद्गति में करते हैं कि कैसे दुखिया ब्राह्मणी की गलती से ~~गिरी~~ आग को भी भगवान का दिया फल और अपनी नियति समझता है। गरीबों ~~की~~ के मनोविज्ञान की सटीक पहचान वे कफन में करते हैं, जहाँ वे जटिल विखंडन कर देने वाली परिस्थितियों को घीसू व माधव की कामचोरी

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

का कारण बताते हैं-
"जिस समाज में दिन रात मेहनत करने वालों की स्थिति उनसे अच्छी नहीं थी।xxx वहाँ ऐसी मानसिकता होना स्वाभाविक है।"

वृद्धजनों के मनोविज्ञान को भी वे सटीक पहचानते हैं। वे कहते हैं कि "बुढ़ापा बहुधा बचपन का पुनरागमन होता है।"

ईदगाह में हामिद के जरिये बालमनोविज्ञान की अभिव्यक्ति लाजवाब बन पड़ी है। रानी सारंधा के जरिये भी उन्होंने राजपूती आन बान वाली मनोवैज्ञानिकता प्रदर्शित की है।

कुल मिलाकर, सामाजिक मनोविज्ञान पर जितनी सूक्ष्म पकड़ प्रेमचंद की थी वैसी अन्यत्र दुर्लभ है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

(ग) 'नई कहानी' की विशेषताओं के संदर्भ में राजेन्द्र यादव की कहानी 'टूटना' पर विचार कीजिये। 15

'राजेन्द्र यादव' नई कहानी आंदोलन के प्रस्तावकों में से एक थे, ऐसे में स्वाभाविक था कि उनकी कहानियों में नई कहानी के प्रयोग नजर आए। 'टूटना' न केवल उनकी स्वयं की प्रतिनिधि कहानी है बल्कि 'नई कहानी' आंदोलन का भी प्रतिनिधित्व सार्थकता से करती है।

'नई कहानी' आंदोलन शहरी जीवन में रिश्तों की टूटने-बिखरने की दास्तां को अभिव्यक्त करने वाला आंदोलन था। नन्हें, यही सच है, एक और जिंदगी, शवयात्रा जैसी कहानियों में जो रिश्तों की बिखरन नजर आती है, वह टूटना की केन्द्रीय विशेषता है। लीना व किशोर का

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

रोमानी प्रेम कैसे परिस्थितियों के सामने बिखर जाता है और कैसे वर्गीय भेद स्पष्ट नजर आता है, यह नई कहानी का ही गुण है। कुछ ऐसे मानव लघुमानव हैं तथा अस्तित्व विघटन व अकेलेपन के शिकार हैं।

'नई कहानी' के केन्द्र में मध्यवर्ग था। इस कहानी में भी मध्यवर्ग है जिस प्रकार मोहन राकेश निर्मम जनता की वर्गीय व्याख्या 'एक और जिंदगी' में करते हैं, वही व्याख्या यहाँ और स्पष्ट होती है। किशोर का मत है कि - "लीना जिन लोगों और जिन वर्ग में रहती है वहाँ निर्मम रहता और स्पष्ट ~~चिंतन~~ चिंतन उनकी विशेषता है।"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

शिल्प की दृष्टि से भी टूटना 'नई कहानी' का प्रतिनिधित्व करती है। कथानक का टूटना, चरित्रों का परिस्थितियों के हाथों नाचना, भाषा का स्वाभाविक प्रयोग, प्रतीकात्मकता, काव्यात्मक भाषा आदि गुण टूटना में भी नजर आते हैं। 'गांधीजी की हत्या' व 'पेज लड़ाते कबूतरों' के प्रतीक रचना में प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति करते हैं।

~~यद्यपि नयी~~ 'नई कहानी' आंदोलन का मूल मंत्र 'भोगा हुआ यथार्थ' था और इस बात को धारण करने में टूटना सफल है।

8 1/2 / 15

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation